लोक सभा सचिवालय
प्रेस एवं जन सम्पर्क स्कंध
संसद भवन, नई दिल्ली
LOK SABHA SECRETARIAT
Press and Public Relations Wing
Parliament House, New Delhi

प्रेस विज्ञप्ति PRESS RELEASE

COMMOTION AND ACRIMONY IN LEGISLATURES ARE MATTER OF CONCERN: LOK SABHA SPEAKER/विधानमंडलों में हंगामा और कटुता चिंता का विषय है: लोक सभा अध्यक्ष

…

HOUSE SHOULD BECOME CENTER OF DIGNIFIED DISCUSSION ON POLICIES AND PROGRAMMES OF GOVERNMENT: LOK SABHA SPEAKER/सभा में सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों पर शालीनतापूर्वक चर्चा होनी चाहिए: लोक सभा अध्यक्ष

…

PRESIDING OFFICERS SHOULD MAINTAIN CONTINUOUS AND CONSISTENT DIALOGUE ACROSS PARTIES AND SET NEW STANDARDS OF POLITICS: LOK SABHA SPEAKER/पीठासीन अधिकारियों को दलों के बीच निरंतर और सुसंगत संवाद बनाए रखना चाहिए और राजनीति के नए मानक स्थापित करने चाहिए: लोक सभा अध्यक्ष

…

BENEFITS OF SUSTAINABLE AND INCLUSIVE DEVELOPMENT SHOULD REACH THE LAST PERSON IN THE SOCIETY: LOK SABHA SPEAKER/सतत और समावेशी विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना चाहिए: लोक सभा अध्यक्ष

…

LOK SABHA SPEAKER ADDRESSES CLOSING SESSION OF 10TH CPA INDIA REGION CONFERENCE IN NEW DELHI/लोक सभा अध्यक्ष ने 10वें सीपीए भारत क्षेत्र सम्मेलन के समापन सत्र को संबोधित किया

…

New Delhi; 24 September, 2024: The 10th Commonwealth Parliamentary Association (CPA) India Region Conference, which commenced on 23 September 2024 in Parliament premises, concluded today. Lok Sabha Speaker, Shri Om Birla, who is also the Chairperson of the CPA India Region, chaired the Concluding Session.

On this occasion, Shri Birla said that commotion and acrimony in legislatures are matter of concern. He informed that this issue has been discussed with the Presiding Officers from time to time and the Presiding Officers have been urged to conduct House proceedings with dignity and decorum and according to Indian values and standards. The traditions and systems of the House should be Indian in nature, and the policies and laws should strengthen the feeling of Indianness to achieve the resolution of 'Ek Bharat, Shreshtha Bharat', he observed. The Presiding Officers may ensure that House becomes the center of dignified discussion on the policies and programmes of the government with everyone's participation, opined Shri Birla.

Stressing that the role of legislatures is important in the development of any country and State, Shri Birla observed that our democratic institutions should constantly endeavor to engage with the public and address their needs and aspirations. He opined that Presiding Officers should take necessary steps to make democratic institutions of the country transparent, accountable and result-oriented. He also suggested that for effective functioning of legislatures, new Members should be given comprehensive training related to functioning of the House, dignity and decorum of the House and utilisation of the legislative instruments available with them to raise the issues of the public. Presiding Officers should maintain continuous and consistent dialogue across the parties and set new standards of politics, he urged.

Expressing happiness that the legislative bodies are digitizing processes and records in legislatures in their States and taking measures for capacity building of public representatives using information technology, Lok Sabha Speaker hoped that such measures would go a long way to improve efficiency and effectiveness of legislatures. State legislatures should enhance the pace of digitization, wherever lagging behind, so that the vision of ‘one nation, one digital platform’ could be realized, he suggested. He also assured that the issues raised by the Presiding Officers during the Conference like financial autonomy, decreasing number of days in the Sessions of the Houses, e-Vidhan, etc. will be discussed further and acceptable solutions will be found.

Shri Birla hoped that the two day Conference would bring visible results in functioning of legislatures. Presiding Officers should work with a new thinking, new vision, and make new rules and policies for the future, he suggested. Shri Birla emphasized that the benefits of sustainable and inclusive development should reach the last person in the society.

42 Presiding Officers, including four Chairpersons and 25 Speakers along with their Principal Secretaries/Secretaries and accompanying officers attended the Conference.

The theme of the Conference was "The Role of Legislative Bodies in the attainment of Sustainable and Inclusive Development."

The Conference was preceded by Executive Committee meeting of the CPA India Region on 23 September, 2024.

On the second day of the Conference i.e. on 24 September, 2024, Lok Sabha Shri Om Birla with Presiding Officers of State Legislative Bodies paid tributes to eminent personalities at Prerna Sthal in Parliament premises

नई दिल्ली; 24 सितंबर, 2024: संसद भवन परिसर में 23 सितंबर 2024 को शुरू हुआ 10वां राष्ट्रमंडल संसदीय संघ (सीपीए) भारत क्षेत्र सम्मेलन आज संपन्न हो गया। समापन सत्र की अध्यक्षता लोक सभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने की, जो सीपीए भारत क्षेत्र के अध्यक्ष भी हैं।

इस अवसर पर श्री बिरला ने कहा कि विधानमंडलों में हंगामा और कटुता चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे पर समय-समय पर पीठासीन अधिकारियों के साथ चर्चा की गई है और पीठासीन अधिकारियों से सदन की कार्यवाही का संचालन गरिमा और शिष्टाचार के साथ तथा भारतीय मूल्यों और मानकों के अनुसार करने का आग्रह किया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि सदन की परम्पराओं और प्रणालियों का स्वरूप भारतीय हो तथा नीतियां और कानून भारतीयता की भावना को मजबूत करें ताकि 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का लक्ष्य प्राप्त हो सके। श्री बिरला ने कहा कि पीठासीन अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि सदन में सभी की भागीदारी हो और सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों पर शालीनतापूर्वक चर्चा हो।

किसी भी देश और राज्य के विकास में विधानमंडलों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए श्री बिरला ने कहा कि हमारी लोकतांत्रिक संस्थाओं को जनता से जुड़ने और उनकी अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए निरंतर प्रयास करने चाहिए। उन्होंने कहा कि पीठासीन अधिकारियों को देश की लोकतांत्रिक संस्थाओं को पारदर्शी, जवाबदेह और परिणामोन्मुखी बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। उन्होंने यह सुझाव भी दिया कि विधानमंडलों के प्रभावी कार्यकरण के लिए नए सदस्यों को सदन के कामकाज, सदन की गरिमा और शिष्टाचार तथा जनसाधारण के मुद्दों को उठाने के लिए उपलब्ध विधायी साधनों के बारे में व्यापक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। उन्होंने पीठासीन अधिकारियों से आग्रह किया कि वे दलों के बीच निरंतर और सुसंगत संवाद बनाए रखें और राजनीति के नए मानक स्थापित करें।

इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कि विधायी निकाय अपने राज्यों में विधानमंडलों में प्रक्रियाओं और अभिलेखों का डिजिटलीकरण कर रहे हैं और सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके जनप्रतिनिधियों के क्षमता निर्माण के लिए प्रयास कर रहे हैं, लोक सभा अध्यक्ष ने आशा व्यक्त की कि ऐसे उपाय विधानमंडलों की कार्यकुशलता और प्रभावशीलता को बेहतर बनाने में बहुत सहायक साबित होंगे। उन्होंने सुझाव दिया कि जहां आवश्यक हो, राज्य विधानमंडलों को डिजिटलीकरण की गति को बढ़ाना चाहिए ताकि 'एक राष्ट्र, एक डिजिटल प्लेटफॉर्म' के सपने को साकार किया जा सके। उन्होंने यह आश्वासन भी दिया कि सम्मेलन के दौरान पीठासीन अधिकारियों द्वारा उठाए गए मुद्दों जैसे वित्तीय स्वायत्तता, सदनों के सत्रों के दिनों की संख्या में कमी, ई-विधान आदि पर आगे चर्चा की जाएगी और स्वीकार्य समाधान निकाले जाएंगे।

श्री बिरला ने आशा व्यक्त की कि इस दो दिवसीय सम्मेलन से विधानमंडलों के कामकाज में बदलाव आएंगे। उन्होंने सुझाव दिया कि पीठासीन अधिकारियों को नई सोच, नई विजन के साथ काम करना चाहिए और भविष्य के लिए अनुकूल नए नियम और नीतियां बनानी चाहिए। श्री बिरला ने इस बात पर भी जोर दिया कि सतत और समावेशी विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना चाहिए।

इस सम्मेलन में चार सभापतियों और 25 अध्यक्षों सहित 42 पीठासीन अधिकारी और राज्यों के प्रधान सचिव/सचिव और उनके साथ आए अधिकारी शामिल हुए।

सम्मेलन का विषय था "सतत और समावेशी विकास की प्राप्ति में विधायी निकायों की भूमिका।"

सम्मेलन से पहले 23 सितंबर, 2024 को सीपीए भारत क्षेत्र की कार्यकारी समिति की बैठक हुई।

सम्मेलन के दूसरे दिन अर्थात 24 सितंबर, 2024 को लोक सभा अध्यक्ष, श्री ओम बिरला ने राज्य विधायी निकायों के पीठासीन अधिकारियों के साथ संसद परिसर में प्रेरणा स्थल पर महान विभूतियों को श्रद्धासुमन अर्पित किए।